अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में विरोध के अध्ययन के लिए सम्भावित प्रमुख दिशाएं
(Main Thrust Areas in the Study of International Conflict)

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में विरोध के अध्ययन/विश्लेषण तथा सिद्धान्त–निर्माण के लिए तत्वों/विशेषताओं का अध्ययन इस प्रकार किया जा सकता है :

(1) क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र सदैव अपने राष्ट्रीय हित के लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है, क्योंकि उसके ऐसे लक्ष्य अथवा कुछ लक्ष्य कई राज्यों द्वारा अपनाए गए लक्ष्यों के विपरीत होते हैं। इस कारण विरोध के अध्ययन में विभिन्न राष्ट्रों के राष्ट्रीय हितों के लक्ष्यों का अध्ययन करना आवश्यक होता है। विशेषकर उन राष्ट्रों के लक्ष्यों का अध्ययन जो कि किसी एक विशेष समय पर विरोध–स्थिति अथवा किसी झगड़े में संलिप्त होते हैं।

(2) सभी राष्ट्रों के राष्ट्रीय हित न तो आपस में पूर्ण रूप में समरूप होते हैं और न ही पूर्णतः विपरीत। इसी कारण अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में लगातार सहयोग तथा विरोध विद्यमान रहते हैं, परन्तु इनकी प्रकृति एवं क्षेत्र लगातार परिवर्तित होता रहता है। इसीलिए अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के क्षेत्र में विरोध का अध्ययन एवं विश्लेषण लगातार किया जाना होता है।

(3) राष्ट्रों के राष्ट्रीय हितों के लक्ष्यों, जो कि विरोध के स्रोत बनते हैं, को दो भागों में विश्लेषित किया जा सकता है : प्राप्ति/सम्पत्ति लक्ष्य (Possession Goals) तथा वातावरणीय लक्ष्य (Milieu Goals) । ऐसा करने से ही अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में उपस्थित विरोध का क्रमबद्ध अध्ययन किया जा सकता है।

(4) अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में विरोध लगातार उपस्थित रहता है। इसी कारण राष्ट्र लगातार विरोध–समाधान की प्रक्रिया में संलग्न रहते हैं। अनसुलझा विरोध सदैव हिंसा, युद्धों तथा आक्रमणों को पैदा करता है जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा पर दबाव पड़ता है जिससे संकट उत्पन्न होते हैं। इन दबावों/संकटों के कारण विश्व में युद्ध छिड़ सकता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि राष्ट्र लगातार विरोध–समाधान प्रक्रिया में लगे रहें तथा आपसी झगड़ों का निपटारा करने को प्राथमिकता दें। किस प्रकार राष्ट्र विरोध–समाधान करने के लिए योजनाएं बनाते हैं तथा कार्य करते हैं, इस प्रश्न का अध्ययन भी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन का विशेष एवं महत्त्वपूर्ण भाग है।

(5) विरोध–समाधान के सम्बन्ध में राष्ट्र कई प्रकार के साधनों—कूटनीति, सम्मेलन कूटनीति, वार्तालाप, सौदेबाज़ी तथा विरोध–समाधान के अन्य शान्तिपूर्ण ढंगों के साथ–साथ युद्ध से कम बल–प्रयोग के साधनों, हस्ताक्षेप, बदला–कार्यवाही आदि का प्रयोग करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय विरोध के अध्ययन में विरोध–समाधान की प्रक्रिया तथा इन साधनों का अध्ययन किया जाना महत्त्वपूर्ण एवं लाभकारी होता है।